हिन्दी सेवी श्री दशरथ बर्मन का साक्षात्कार

साक्षात ग्रहण- डॉ॰ रीतामणि वैश्य

रीतामणि वैश्य : जबसे हमने आपको देखा है, एक ही चेहरा सामने आता है जो शांत और गंभीर है। आप बहुत कम बोलते हैं। कभी आपसे अपने बारे में जानने का अवसर भी नहीं मिला। आज आपसे आपके जीवन के बारे में कुछ बातें करना चाहती हूँ।

दशरथ बर्मन : हाँ, मैं कम बोलता हूँ, पर बोलता हूँ। मेरी तबीयत अब ठीक नहीं है। बहुत बातें भूल चुका हूँ। फिर भी जितना हो सके, मैं बताने की कोशिश करूँगा।

रीतामणि वैश्य : आपके बचपन के बारे में थोड़ा बताइए ।

दशरथ बर्मन : मेरा जन्म कामरूप जिला के नलबारी थाना के अंतर्गत कालाग गाँव में 1942 ई.में हुआ था । मेरे पिता का नाम तंभिचरण बर्मन और मेरी माँ का नाम सर्वेश्वरी बर्मन है । गाँव के अन्य साधारण लड़के की तरह ही मेरा बचपन बिता।

रीतामणि वैश्य : कालाग गाँव में आपने विद्यार्थी जीवन शुरू किया। वहाँ से शुरू किये गये इस सफर में आपने पर्याप्त सफलता हासिल की।

दशरथ बर्मन : विद्यार्थी जीवन के बारे में कहूँ तो मेरा यह सफर बहुत लंबा रहा। पढ़ने की इच्छा थी तो 1992 ई॰ तक पढ़ता ही रहा। 1957 ई. में रत्नमाला व्याकरण शास्त्र में पोराकुछि दर्शन विद्यापीठ से 'आद्य' परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी । यह परीक्षा असम संस्कृत बोर्ड के अधीन चलती है। 1958 ई. बरभाग कालाग एच.इ. स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1961 ई. में कॉटन कॉलेज से आइ.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की । 1962 ई. में 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' गुवाहाटी से विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की । 'नॉर्थ गुवाहाटी गॉर्ल्स एच.इ. स्कूल' में हिंदी शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए 'बी. बरुवा कॉलेज' से 1964 ई. में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की । फिर दोबारा 1965 ई. में गौहाटी विश्वविद्यालय से बी.ए. (स्पेशियल) की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद आगरा विश्वविद्यालय से 1967 ई. में द्वितीय श्रेणी में हिंदी में एम.ए. पास किया । 1970 ई. में गुवाहाटी के 'वाणीकांत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय' में अध्ययन कर गौहाटी विश्वविद्यालय से बी.टी. पास

किया । 1988 ई. में जे.बी. लॉ कॉलेज में दाखिला लेकर 1992 ई. में गौहाटी विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. परीक्षा उत्तीर्ण की ।

रीतामणि वैश्य : असम के हिन्दी जगत के प्रति आपकी बड़ी देन रही। आपको हिंदी के अध्ययन की प्रेरणा कहाँ से मिली थी ?

दशरथ बर्मन : हिन्दी के प्रति मेरे झुकाव का पहला कारण रोजगार था। जब मैंने मैट्रिक पास करके गुवाहाटी आकर कॉटन कॉलेज में आइ.ए. में दाखिला लिया, तब ज्ञात हुआ कि विभिन्न जगहों के हिंदी विभागों में बहुत से पद खाली हैं । मैंने सोचा कि मैं भी अगर हिंदी विषय का अध्ययन करूँ, तो सहज ही एक नौकरी मिल जायेगी। इसी से हिन्दी के प्रति मेरा आग्रह बढ़ा। फिर 1961 ई. में आइ.ए. पास करने के बाद 1962 ई. में 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' गुवाहाटी से विशारद की परीक्षा पास की ।

रीतामणि वैश्य : मनुष्य इयों-ज्यों आगे बढ़ता है, उसके अनुभव की पोटली भी बड़ी होती जाती है। जीवन की घटनाओं को समेटते हुए वह अग्रसर होता है । आपके लंबे विद्यार्थी जीवन के मधुर अनुभव होंगे । बॉलीवुड के सुपर स्टार अमिताभ बच्चन के साथ भी आप एक ही छात्रावास में रहते थे। उन दिनों की कुछ रोचक घटनाएँ सुनाइए।

दशरथ बर्मन : विद्यार्थी जीवन के अनुभव की बात करूँ तो बहुत सी बातें मन में आती हैं। क्योंकि स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक अध्ययन काल में बहुत जगह जाना हुआ, बहुत लोगों से मिलना हुआ । इसी कारण बहुत से अनुभवों के साथ कुछ सरस स्मृतियाँ भी हैं, जो मुझे उन दिनों तक वापस ले जाती हैं । इन स्मृतियों में मेरे आगरा विश्वविद्यालय के दिनों की स्मृतियाँ आज भी ताजी हैं। उनमें भी अमिताभ बच्चन के साथ हुई कई रोचक घटनाएँ हैं। आगरा विश्वविद्यालय में एम.ए. की पढ़ाई के दौरान मेरे साथ एक ही हॉस्टल में मेरे बगल वाले कमरे में बॉलीवुड के प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन रहते थे । हम दोनों के विषय अलग थे, फिर भी हम दोनों में अच्छी दोस्ती थी । उस समय की कुछ घटनाएँ बताता हूँ । अमिताभ बच्चन हमेशा मुझे 'बर्मन दा' कहकर बुलाते थे और मैं उन्हें 'बच्चन भाई' कहकर । उनकी नई फिल्म अगर शुक्रवार को रिलिज होने वाली हो, तो वे बृहस्पतिवार को हम सभी को बुलाकर इकट्ठा करके उनकी आने वाली फिल्म की सूचना देने के साथ ही हम सभी को मुफ्त में फिल्म दिखाने ले जाते थे । मेरी पढ़ाई के दिनों से ही बच्चन जी द्वारा अभिनीत लगभग हर फिल्में मैंने देखी हैं ।

यह भी आगरा विश्वविद्यालय के दिनों की ही घटना है। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को कुछ असुविधा मिली थी । उस असुविधा का उल्लेख करते हुए बच्चन भाई ने उनके दोस्तों के साथ मिलकर विभागीय अधिकारी

के नाम एक एप्लीकेशन लिखा और फिर उसमें सभी के हस्ताक्षर माँगे। एप्लीकेशन अंग्रेजी में लिखा गया था। एप्लीकेशन को हस्ताक्षर के लिए मेरे पास भी लाया गया। एप्लीकेशन को मैंने पढ़ा और उसमें कुछ गलतियाँ देखी। मैंने हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया और बोला कि गलत एप्लीकेशन पर मैं हस्ताक्षर नहीं करूँगा। उसी समय बच्चन भाई ने उसे सुधार कर ठीक से लिखने के लिए मुझसे आग्रह किया। मैंने अंग्रेजी में सारी बातें लिखी और उन्हें दिया। उन्होंने एप्लीकेशन पढ़ा और उन्हें बहुत अच्छा लगा। तब से इस प्रकार का कुछ लिखना होता, तो हमेशा मेरे पास अर्थात् उनके बर्मन दा के पास ले आते थे और मैं भी जितना हो सके सही ढंग से लिखने का प्रयास करता था।

रीतामणि वैश्य : आपको हमने हमेशा धोती कुर्ता में ही देखा है। विद्यार्थी काल में भी आप धोती ही पहना करते थे। अमिताभ बच्चन और आपकी धोती का एक किस्सा सुना था। क्या वह सच है ?

दशरथ बर्मन : सही कहा। मैं तब भी धोती ही पहनता था। हॉस्टल में ऐसी छेड़खानी तो चलती ही रहती है। एक बार की घटना है- मैं धोती पहनता था, इस कारण बच्चन भाई और उनके दोस्त मिलकर मुझे पैंट पहनाने के लिए मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गये थे। मुझे किसी भी कीमत पर पैंट नहीं पहननी थी। मैं तंग आ चुका था। बचने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। अंत में मेरे दिमाग में एक आइडिया आया। जिस तरह मेरे लिए पैंट पहनना असंभव था, उसी तरह बच्चन भाई और उनकी टीम के लिए मेरी तरह धोती पहनना संभव नहीं था। मैंने एक शर्त रखी कि अगर वे धोती मेरी तरह पहन पायेंगे तभी मैं पैंट पहनूँगा। एक दिन उन सबने पूरा दिन मेरी तरह धोती पहनने की कोशिश में बिताया,पर बच्चन भाई और उनके दोस्त मेरे जैसी धोती नहीं पहन पाये। उस दिन से उनलोगों ने मुझे पैंट पहनाने की जिद छोड़ी। मैं बच गया, मुझे पैंट नहीं पहननी पड़ी।

हाँ, धोती के बाद और एक घटना हुई थी, सिगरेट की। बच्चन भाई और दोस्तों ने मुझे कई बार सिगरेट पिलाने की कोशिश की थी। पहले दिन पीने से मैंने मना किया। पर वे हैं कि जिद पर अड़ गये। मैं गाँव से गया था। मुझे जाते वक्त घरवालों ने जो भी समझा-बुझाकर भेजा था, वह पूरी तरह से याद था। मेरी धारणा यही थी कि सिगरेट पीना बुरी आदत है, मुझे नहीं पीनी है। पर बच्चन भाई से बचना भी मेरे लिए मुश्किल हो गया था। मैं बार-बार कैसे मना करूँ। हॉस्टल की बात है। उनके सामने मैं संस्कार की बात करता तो उनकी उपेक्षा हो जाती, जो मैं नहीं कर सकता था। मैंने सोचा कि इस बार भी मैं बच्चन भाई के सामने कुछ ऐसी शर्त रखूँगा कि जिसको निभाना उनके लिए संभव न हो। मैंने कुछ लोगों से पूछ कर और खुद बाजार घूम कर जान लिया कि

आगरा में 'फिल्टर' सिगरेट नहीं मिलती। मैंने इस जानकारी का पूरा फायदा उठाया। मैंने बच्चन भाई से कहा कि मैं फिल्टर सिगरेट के अलावा दूसरी सिगरेट नहीं पीऊँगा। उनको बहुत खोजने के बाद भी फिल्टर सिगरेट नहीं मिली और इस बार भी मैं बच गया।

रीतामणि वैश्य : मूलतः असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आपकी कर्मभूमि रही है। आप असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से कैसे और कब जुड़े ?

दशरथ बर्मन : 1971 ई. में गुवाहाटी के केंद्रीय विद्यालय में उपचारात्मक शिक्षक (Remedial Teacher) पद छोड़ कर मैंने असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में परीक्षा सचिव का पद ग्रहण किया। 1983 ई. में समिति के प्रधान सचिव के रूप में मेरी पदोन्नति हुई। 1984 ई. में राज्य सरकार द्वारा समिति का अधिग्रहण होने पर प्रधान सचिव के पद का नाम सहकारी सचिव कर दिया गया। इस प्रकार असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में नौकरी करते हुए पुन: मैंने प्रधान सचिव का पद ग्रहण किया और 2002 ई. के 31 अगस्त में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से सेवानिवृत्त हुआ।

रीतामणि वैश्य : आपने असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अलावा और किन संस्थाओं की सेवा की या नौकरी की?

दशरथ बर्मन : असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अलावा भी कई संस्थाओं की सेवा करने का मुझे अवसर मिला। 1961 ई. में आइ.ए. पास करने बाद जनगणना कार्यालय (office of the census operation of India) गुवाहाटी से जुड़ा। 1962 ई. में जनगणना का कार्य पूरा होने पर उत्तर गुवाहाटी बालिका हाईस्कूल में हिंदी शिक्षक का पद ग्रहण किया। 1965 ई. में हाईस्कूल का पद छोड़ कर उच्च शिक्षा के लिए आगरा चला गया। 1967 ई. में आगरा विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. पास करने के बाद गुवाहाटी के यूनाइटेड कमर्शियल बैंक के प्रधान कर्यालय में सहकारी कर्मचारी का पद ग्रहण किया। 1968 ई. में बैंक की नौकरी छोड़कर गुवाहाटी में स्थित केंद्रीय विद्यालय में उपचारात्मक शिक्षक का पद ग्रहण किया। इसी समय बाणीकांत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययन कर गुवाहाटी विश्वविद्यालय से बी.टी. पास किया। 1971 ई. में केंद्रीय विद्यालय से पद त्याग कर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के परीक्षा सचिव का पद ग्रहण किया। 1978 ई. में बाणीकांत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अंशकालिक अध्यापन (Part time lecturer) के रूप में कार्य आरंभ कर 1984 ई. के मार्च महीने तक इस पद पर सेवा की।

रीतामणि वैश्य : आपने हिंदी के विकास के लिए और क्या-क्या काम किये ?

दशरथ बर्मन : हिंदी के विकास तथा हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए मैं हमेशा कार्य करता आया हूँ। मैंने छात्र-छात्राओं की सुविधा के लिए कुछ पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद भी किया। मौलिक लेखन में मैं खास काम

नहीं किया, पर अनुवाद के क्षेत्र में कुछ काम जरूर किए हैं। 1982 ई. में भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के सूचना एवं प्रचार मंत्रालय के 'पौराणिक बाल कथाएँ' नामक बाल कहानी की पुस्तक का 'पौराणिक शिशु साधु' नाम देकर असमीया भाषा में अनुवाद किया । असम माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रस्तुत छठी कक्षा की पाठ्यपुस्तक 'गणित परिचय- द्वितीय भाग' पुस्तक का हिंदी में अनुवाद किया । असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने 1983 ई. में इसका पहला संस्करण निकाला । माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रस्तुत नौवीं कक्षा की गणित की पाठ्यपुस्तक का असमीया से हिंदी में अनुवाद किया । यह पुस्तक असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने 2003 ई. में प्रकाशित किया । सर्वशिक्षा अभियान मिशन के अंतर्गत 2002 ई. के नवंबर से 2003 ई. के अंत तक हिंदी पाठ्यपुस्तक प्रस्तुत करने का मुख्य दायित्व मुझ पर था । इस कलावधि में पाँचवीं और छठी कक्षा का हिंदी साहित्य की दोनों नयी पाठ्यपुस्तकें मैंने प्रस्तुत की । पहली कक्षा से लेकर चौथी कक्षा तक की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का पुनरीक्षण किया । 2004 ई. में छठी कक्षा वाली पाठ्यपुस्तक प्रकाशित हुई और शेष पाठ्यपुस्तकें अगले साल असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से प्रकाशित हुईं । बाद में पाठ्यपुस्तक प्रस्तुत करने का दायित्व राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) ने ले लिया।

रीतामणि वैश्य : आपने हिन्दी के अलावा अन्य कई क्षेत्रों में सेवा की है।उनके बारे में थोड़ा बताइए।

दशरथ बर्मन : बचपन से ही समाज के लिए काम करने की मेरी इच्छा थी । 1958 ई. में गुवाहाटी आने के बाद ही बहुत मेहनत करके अध्ययन और नौकरी करते हुए सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर समाज को आगे बढ़ाना मेरी हॉबी थी । 1961 ई. में उत्तर गुवाहाटी बालिका हाईस्कूल में पद ग्रहण करने के बाद वहाँ एक कॉलेज स्थापित करने के लिए सार्वजनिक सभाओं का आयोजन होता था । कॉलेज की स्थापना हेतु लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए सभाओं में हिस्सा लेता था । और कॉलेज बहुत कम दिनों में ही पूर्ण रूप से स्थापित हो गया। इस प्रकार कॉलेज में अध्ययन करने के दौरन ही मेरे मित्र रमेन शर्मा और स्वर्गीय काशीनाथ शर्मा के साथ नुनमाटि हाईस्कूल की शुरुआत की थी । स्वर्गीय सांसद दिनेश गोस्वामी जी की सहायता से इस स्कूल द्वारा दखल की गई रेलवे की जमीन स्कूल के नाम विभाग से आवंटित करवाया था । मैं 1979 ई. से गुवाहाटी के गणेश नगर वशिष्ठ में रहने लगा । गणेश नगर में बसते ही यहाँ 'गणेश नगर शिशु विद्यालय' नाम से एक विद्यालय की लोगों की सहायता से शुरुआत की और सरकार के साथ संपर्क साधकर 1983 ई. के 1 सितंबर में स्कूल को प्रांतीकृत किया । प्राइमरी स्कूल से उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के लिए इस क्षेत्र में एम.इ. स्कूल नहीं था । इसीलिए वशिष्ठ के लताकटा क्षेत्र में 'वशिष्ठ विद्यापीठ एम.इ. स्कूल' नाम से एक स्कूल की शुरुआत की । यह विद्यापीठ भी प्रांतीकृत हो गया है । समग्र बेलतला क्षेत्र में कोई कॉलेज नहीं था । इस क्षेत्र के बुद्धिजीवी और समाजसेवी लोगों के सामूहिक प्रयास से जनता से चंदा लेकर 'बेलतला महाविद्यालय' नाम से एक कॉलेज की खानापारा में शुरुआत करने में

सहयोग दिया । बाद में जगह की कमी होने पर गणेश मंदिर हाईस्कूल के बिल्डिंग की पहली मंजिल पर अस्थायी कमरे बनाकर कुछ साल पार करने के बाद राज्य सरकार ने कॉलेज के लिए 6 बिघा जमीन बेलतला एम.ई. स्कूल के पास आवंटित की । अब बेलतला महाविद्यालय अपने आवंटित जमीन पर एक पूर्णांग कॉलेज के रूप में स्थित है । 2002 ई. के 31 अगस्त में सेवानिवृत्त होकर उसी वर्ष नवंबर महीने से 2003 ई. के अंत तक सर्वशिक्षा अभियान मिशन में सेवा की ।बृहत्तर गणेश नगर सेवानिवृत्त कर्मचारी संस्था के परामर्शदाता के पद रहकर (वर्तमान अध्यक्ष) 2006 ई. से क्षेत्र के सामूहिक कार्यों में व्यस्त रहकर संतुष्टि प्राप्त कर रहा हूँ ।

रीतामणि वैश्य : आपने सही मायने में समाज की सेवा की है। नौकरी के साथ पढ़ाई और फिर समाज सेवा और दीर्घ समय के लिए। कैसे यह संभव हुआ?

दशरथ बर्मन : जितना हो सके मैंने समाज के लिए कुछ करने का प्रयास किया। इस प्रकार सामाजिक कार्यों में खुद को व्यस्त रखते हुए बहुत संतुष्टि मिलती है। यह संतुष्टि कर्म करने की प्रेरणा देती रहती है।

रीतामणि वैश्य : असम में हिन्दी को खड़ा करने में आपलोगों का बड़ा अवदान रहा । जिस तरह की आपकी सेवा रही, उस तरह से लोग आपलोगों को नहीं जानते। यह साक्षात्कार आपके कर्मों को प्रकाशित करने का यह एक प्रयास भर है। आप स्वस्थ रहें। मैं आपकी दीर्घायु कामना करती हूँ।

दशरथ बर्मन : सिर्फ मैं ही नहीं, मेरे जैसे और अनेक लोगों की सेवा के फलस्वरूप आज हिन्दी को पूर्वोत्तर में यह गति मिली है। कई गुजर गये। बहुत लोगों की तबीयत ठीक नहीं है। असम के कोने-कोने में हिन्दी के प्रचार में भागने-फिरने वाले लोग अभी उम्र के आगे मजबूर हो गये हैं। मुझे अच्छा लगा कि मेरे कर्मों की याद कर हमारा साक्षात्कार लिया जा रहा है। मुझसे जो हुआ, मैंने किया। अब हिन्दी की बागडोर तुम्हीं लोगों को संभालनी है। अंत में हिन्दी की सभी संस्थाओं की उन्नति की कामना करता हूँ और सभी लोगों की मंगल कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी का विकास निरंतर होता रहें।

NEGLIMPSE

छायाचित्र

हिन्दी प्रचार और परीक्षा
तारीख 28 और 29 मार्च 1992
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति